Part-I Hons.
P. Ist

नागभट्ट II की जीवनी एवं उपलब्धि पर प्रकाश डालें।

Nagabhatta II

वत्सराज की मृत्यु के उपरांत नागभट्ट प्रतिहार वंश की गद्दी पर बैठा। इसने 805 ई० से 833 तक शासन किया। इसकी माता का नाम सुन्दरीदेवी था। यह बड़ा साहसी शासक था और इसने अपने पूर्वजों के राज्य को पुन: बढ़ाने और दृढ़ करने का प्रयत्न किया।

राष्ट्रकूट वंश जो प्रतिहार वंश का पुराना शत्रु था नागभट्ट द्वितीय ने उसके साथ युद्ध किया। ताम्रपत्रों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इसने लगभग 807 ई० के अपने वंश के पुराने शत्रु राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द तृतीय से युद्ध किया। इस युद्ध में नागभट्ट द्वितीय को सफलता नहीं मिली राधनपुर ताम्रपत्र में लिखा है " गुर्जरेनष्ट क्वापि भयागया न समंर स्वप्नेऽपि पश्येच्छला " अर्थात गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट के शौर्य को नष्ट कर दिया और वह भयभीत होकर विलुप्त हो गया। न जाने कहां जिससे कि उसे स्वप्न में भी युद्ध न दिखाई दे। नागभट्ट को हराकर गोविन्द III ने धर्मपाल से संधि कर ली और इस प्रकार मध्य भारत के विस्तृत क्षेत्र पर अपना शासन जमा लिया। परन्तु शीघ्र ही उसे अपनी राजधानी में लौट जाना पड़ा और गृहयुद्ध के झंझट में फंसना पड़ा।

नागभट्ट ने गोविन्द तृतीय की इस परेशानी से लाभ उठाया और अपनी खोई हुई शक्ति को केन्द्रित करके कन्नौज पर आक्रमण कर दिया। कन्नौज का राजा चक्रायुध परास्त हुआ और नागभट्ट ने कन्नौज को अपनी नयी राजधानी बना लिया। इसके पश्चात कन्नौज पर बहुत समय तक प्रतिहारों का शासन रहा नागभट्ट की कन्नौज विजय के सम्बन्ध में श्री आर० एस० त्रिपाठी अपनी पुस्तक History of Kanauj में लिखते हैं
" The defeat was evidently followed the annexation of the kingdom, and the

Scanned with CamScanner

Transfer of the prath prathihara capital of Kanauj

Since Chakrayudha disappears about this time from the stage of history and Nagabhatta Successors for several generation are definitely known have held their court here. The conquest of Kanauj atonce gave to the prathihara the supreme power in the north.

कन्नौज का राजा चक्रायुध धर्मपाल द्वारा सरोहित था। चक्रायुध की पराजय का हाल सुनकर कदाचित धर्मपाल ने नागभट्ट से लोहा लेना चाहा परन्तु उसे भी नागभट्ट के हाथों मुँह की खानी पड़ी। ग्वालियर का अभिलेख नागभट्ट की इन विजयों का साक्षी है, इसमें लिखा है—

"जित्वा पराश्रय कृत स्फुट नीच भावम,
चक्रायुध विनयनम्रव पुष राजत,
निर्जित्य वंगपति मानारिमूढ विवस्वान,

जोधपुर के अभिलेख से भी विदित होता है कि वाउक के पिता कक्क ने मुदगगिरि में गौड़ों से युद्ध किया था। कक्क नागभट्ट II का सामंत था जो राजपूताना में शासन कर रहा था। बड़ौदा अभिलेख और चारसू अभिलेखों से भी नागभट्ट की विजयों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। नागभट्ट की विजयों के बारे में डा० राधाकुमुद मुखर्जी लिखते हैं —

"When Rastrakuta King Govind III was away in the South. Nagavatta II with the help of his Saurashtra feudatery, Vahukdhavala defeated a Rashtrakuta army. The Rastrakutaas however ceased to troubll him owing to their internattes curd after Govind III (814 A.D. But Dharmp as Magadh was hostile to him as shown above. Nagabhatta defeated him at Muagagiri

His power was felt in the distant countries of Andhra, Sindhu, Vidarbha and Kalinga which South his alliance. He was also conquered Anarta, Malava, Kiratas Turushkas, Matsya and Vatas.

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गोविन्द III के स्वदेश वापस चले जाने के पश्चात नागभट्ट ने पुनः अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लिया। गोविन्द III नागभट्ट से लोहा न ले सका क्योंकि वह अपने घरेलू झगड़ों में उलझा रहा उसने केवल इतना ही प्रबंध करना उचित समझा कि अपने मालवा के सामंत कर्कराज को सावधान कर दे कि वह किसी भी समय नागभट्ट के आक्रमण को रोकने के लिए तैयार रहे।

नागभट्ट ने आन्ध्र, सिन्धु, विदर्भ और कलिंग पर विजय प्राप्त की। मिहिर भोज की ग्वालियर प्रशस्ति में लिखा है

"यन्त्रान्ध्र सैन्धव विदर्भ कलिंग भूपैः कुमार धामनि पतंगपतैः"

अर्थात आन्ध्र सिन्धु विदर्भ और कलिंग के सम्राट वैसे ही उसकी शरण में आ गिरे जैसे पतंगे अग्नि में आ गिरते हैं।

इसी ग्वालियर अभिलेख से नागभट्ट की अन्य विजयों के विषय में भी जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रशस्ति के अनुसार नागभट्ट ने आनर्त, मालवा, किरात, तुरुष्क, वत्स, मत्स्य आदि को भी बलात छीन लिया। श्री त्रिपाठी उस समय के कन्नौज सम्राट की सीमाओं के विषय में लिखते हैं

It is difficult to see how far they represent actual annexations but making due allowance for any exaggeration we may roughly define the Kingdom of Kanauj under Nagabhatta as comprising parts of Rajputana a large portion of the modern United

provinces and Central India perhaps northern Kathiawar with Kausambi and adjacent territeries for the south eastern limit.

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नागभट्ट ने मुसलमानों को भी पराजित किया था। ग्वालियर के अभिलेखों में तुरुष्कों की पराजय का स्पष्ट उल्लेख है। प्रबन्ध कोश नामक ग्रंथ में लिखा है कि सुल्तान बेग वारिस अथवा बशर ने प्रतिहार राज्य के पश्चिमी भाग पर आक्रमण करके अपने अधीन करना चाहा था परन्तु नागभट्ट ने अपने सामंत गोविन्द राज की सहायता से उसे खदेड़ दिया।

अभिलेखों से यह भी स्पष्ट है कि नागभट्ट ने चौहानों पर भी विजय प्राप्त की थी। पृथ्वीराज विजय नामक ग्रंथ लिखा है कि कन्नौज नरेश के साथ चौहान गूवक ने अपनी भगिनी का विवाह किया था। गूवक प्रथम का समकालीन नागभट्ट ही थी। अतः यह विवाह अवश्य ही नागभट्ट से सम्पन्न हुआ होगा। हर्ष अभिलेख के अनुसार "अद्य श्री गूवकाख्या प्रथित-नरपतिरचाहमानान्वयो भूत श्री मन्नागवलोक प्रवर नृप समालब्ध वीर प्रतिष्ठा।

अर्थात उसके एक पूर्वज गूवक प्रथम ने नागवलोक (नागभट्ट) की सभा में सम्मान प्राप्त किया था।

अपने अनेक विजयों के कारण नागभट्ट ने अनेक उपाधियाँ धारण किया था। इन उपाधियों में परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर की उपाधि उल्लेखनीय है। इसकी मृत्यु 833 ई० में हुई।